लीची के बाग की खास देखभाल का है समय

डॉ अनिल कुमार
प्रधान वैज्ञानिक, केविके सरैया

डॉ रजनीश कुमार
वैज्ञानिक, केविके सरैया

फरवरी-मार्च महीने में लीची में फूल आने लगते है. इस वक्त लीची के पेड़ों में कीट और रोग का प्रकोप भी होने की संभावना रहती है. इसलिए लीची की बागवानी करने वाले किसानों को खास ध्यान देने की जरूरत है. लीची के लिए यह मौसम बेहद नाजुक है. अच्छे उत्पादन के लिए लीची बागों का उचित देखभाल जरूरी है. थोड़ी सी लापरवाही साल भर की मेहनत को बर्बाद कर सकती है. लीची स्टिंक बग, दहिया कीट, लीची माइट और फल और बीज छेदक कीट का प्रकोप हो सकता है. इससे लीची बागों को बचाने की जरूरत होती है.

लीची स्टिंक बग

इस कीट के नवजात और वयस्क दोनों ही पौधों के ज्यादातर कोमल हिस्सों जैसे कि बढ़ती कलियों, पत्तियों, पत्तीवृत, पुष्पक्रम, विकसित होते फल, फलों के डंठल और लीची के पेड़ की कोमल शाखाओं से रस चूसकर फसल को प्रभावित करते हैं. रस चूसने के चलते फूल और फल काले होकर गिर जाते हैं. कीटनाशक के छिड़काव से ये कीट जल्दी मर जाते हैं. अगर कुछ कीट बाग के एक भी पेड़ पर बच गए, तो वह अपनी आबादी जल्दी ही उस स्तर तक बढ़ा लेने में सक्षम होते हैं, जो पूरे बाग को संक्रमित करने के लिए पर्याप्त होता है.

बचाव के उपाय

- कीटनाशक का दो छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर करें.
- थियाक्लोप्रिड 21.7% एससी (0.5 मिली/ली) फ्रिप्रोनिल 5% एससी (1.5 मिली/ली) प्रति लीटर पानी या
- थियाक्लोप्रिड 21.7% एससी (0.5 मिली/ली) प्रोफेंफोस 50% एससी (1.5 मिली/ली) प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें
- जब भी कीटनाशकों का छिड़काव करें तब जमीन पर गिरे कीटों को झाड़ू से एक जगह इकट्ठा कर जमीन गड्ढा कर उसमें डाकर मिट्टी से ढंक दें. कीटनाशी घोट में स्टीकर का इस्तेमाल 0.4 मिली/ली की दर से करें.

लीची में लगने वाली दहिया कीट

इस कीट के शिशु और मादा लीची के पौधों की कोशिकाओं का रस चूस लेते हैं, जिसके कारण मुलायम तने और मंजर सूख जाते हैं और फल गिर जाते हैं.

ऐसे करें बचाव

- बाग की मिट्टी की निकाई-गुड़ाई करने से इस कीट के अंडे नष्ट हो जाते हैं.
- पौधे के मुख्य तने के नीचे वाले भाग में 30 सेमी चौड़ी अल्काथीन या प्लास्टिक की पट्टी लपेट देने और उस पर कोई चिकना पदार्थ ग्रीस आदि लगा देने से इस कीटे के शिशु पेड़ पर चढ़ नहीं पाते हैं.
- जड़ से 3 से 4 फीट तक धड़ भाग को चूना से पुताई करने पर भी इस कीट के नुकसान से बचाया जा सकता है.
- इमिडाइक्लोप्रीड 17.8 फीसदी एस.एल का 1 मिली प्रति 3 लीटर पानी या थायोमेथाक्साम 25 फीसदी WG प्रति 1ग्राम / 5 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए.

लीची माइट

कीट वयस्क और शिशु पत्तियों के निचले भाग पर रहकर रस चूसते हैं, जिसके कारण पत्तियां भूरे रंग के मखमल की तरह हो जाती हैं और अंत में सिकुड़कर सूख जाती हैं. इसे "इरिनियम" के नाम से जाना जाता है.

बचाव का तरीका

- इस कीट के ग्रस्त पत्तियों और टहनियों को काटकर जला देना चाहिए.
- इस कीट का आक्रमण नजर आने पर सल्फर 80 फीसदी घु.चू. का 3 ग्राम या डायकोफॉल 18.5 फीसदी इ.सी का 3 मिली या इथियॉन 50 फीसदी इ.सी का 2 मिली या प्रोपरजाईट 57 फीसदी इ.सी का 2 मिली प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए.

लीची का फल और बीज छेदक

कीट के पिल्लू नये फलों में घुसकर उसे खाते हैं, जिसके कारण प्रभावित फल गिर जाते हैं. फलों की तुड़ाई देरी से करने या वातावरण में अधिक नमी के कारण पिल्लू फल के डंठल के पास छेदकर फल के बीज और गुद्दे को खाते हैं. उपज का बाजार मूल्य कीट ग्रसित होने के कारण कम हो जाता है.

अपनाएं ये तरीके

- बाग की नियमित साफ-सफाई करनी चाहिए.
- डेल्टा मेथ्रिन 2.8 फीसदी इ.सी का 1 मिली /लीटर पानी या साईपरमेथ्रिन 10 फीसदी इ.सी का 1 मिली /लीटर पानी या नोवालुरॉन 10 फीसदी इ.सी का 1.5 मिली / लीटर पानी के घोल बनाकर फलन की अवस्था पर छिड़काव करना चाहिये.